SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ममता कालिया के उपन्यासों में शिक्षित और कामकाजी महिलाओं की स्थिति

ओनम साहू, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
ओनम साहू, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/08/2022
Revised on : -----
Accepted on : 22/08/2022
Plagiarism : 01% on 16/08/2022

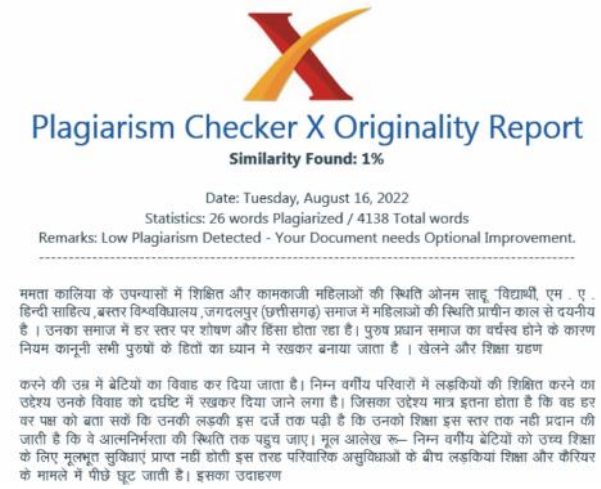

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, August 16, 2022
Statistics: 26 words Plagiarized / 4138 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ममता कालिया के उपन्यासों में शिक्षित और कामकाजी महिलाओं की स्थिति ओनम साहू, विद्यार्थी, एम . ए . हिन्दी साहित्य ,बस्तर विश्वविद्यालय ,जगदलपुर (छत्तीसगढ़) समाज में महिलाओं की स्थिति प्राचीन काल से दयनीय है । उनका समाज में हर स्तर पर शोषण और हिंसा होता रहा है। पुरुष प्रधान समाज का वर्चस्व होने के कारण नियम कानूनी सभी पुरुषों के हितों का ध्यान मे रखकर बनाया जाता है । खेलने और शिक्षा ग्रहण

करने की उम्र में बेटियों का विवाह कर दिया जाता है। निम्न वर्गीय परिवारों में लड़कियों की शिक्षित करने का उद्देश्य उनके विवाह को दृष्टि में रखकर दिया जाने लगा है। जिसका उद्देश्य मात्र इतना होता है कि वह हर वर पक्ष को बता सकें कि उनकी लड़की इस दर्जे तक पढ़ी है कि उनको शिक्षा इस स्तर तक नही प्रदान की जाती है कि वे आत्मनिर्भरता की स्थिति तक पहुच जाए। मूल आलेख रू– निम्न वर्गीय बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए मूलभूत सुविधाएं प्राप्त नही होती इस तरह पारिवारिक असुविधाओं के बीच लड़कियां शिक्षा और कैरियर के मामले में पीछे छूट जाती है। इसका उदाहरण

शोध सार

समाज में महिलाओं की स्थिति प्राचीन काल से दयनीय है। उनका समाज में हर स्तर पर शोषण और हिंसा होता रहा है। पुरुष प्रधान समाज का वर्चस्व होने के कारण नियम कानूनी सभी पुरुषों के हितों का ध्यान मे रखकर बनाया जाता है। खेलने और शिक्षा ग्रहण करने की उम्र में बेटियों का विवाह कर दिया जाता है। निम्न वर्गीय परिवारों में लड़कियों की शिक्षित करने का उद्देश्य उनके विवाह को दृष्टि में रखकर दिया जाने लगा है। जिसका उद्देश्य मात्र इतना होता है कि वह हर वर पक्ष को बता सकें कि उनकी लड़की इस दर्जे तक पढ़ी है। उनको शिक्षा इस स्तर तक नही प्रदान की जाती है कि वे आत्मनिर्भरता की स्थिति तक पहुच जाए।

मुख्य शब्द

ममता कालिया, शिक्षा, महिला, आत्मनिर्भर.

निम्न वर्गीय बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए मूलभूत सुविधाएं प्राप्त नहीं होती। इस तरह पारिवारिक असुविधाओं के बीच लड़कियां शिक्षा और कैरियर के मामले में पीछे छूट जाती है। इसका उदाहरण उपन्यास में इस तरह मिलता है।

हम चार भाई बहन थे, चारो पढ़ते थे। डैडी ने कह रखा था, देखो तुम्हें पढ़ाने और खाना खाने के अलावा फिलहाल हम कुछ अफोर्ड नहीं का सकते। हाई स्कूल के बाद हम अपनी किस्मत पर पढ़े, किसी को स्कॉलरशिप मिल गयी, किसी को पार्टटाइम नौकरी।"[1] इस कथन से प्रकट होता है कि पिता की आर्थिक तंगी के बावजूद, लड़कों को खुद को स्थापित करने का मौका कभी–कभी मिल जाता हैं लेकिन लड़कियाँ इस स्थिति से बाहर हो जाती हैं।

निम्नवर्गीय लड़कियों को शिक्षा और घरेलू कामों के मध्य जूझना पड़ता है। इस वर्ग की लड़कियों को

घरेलू कामों में ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। इनका एडमिशन घर के पास की स्कूलों में करा दिया जाता है, जिससे वे पढ़ाई के साथ–साथ घर के कामों में हाथ बटा सकें। माँ के साथ घर के कार्यों में हाथ बंटाते–बंटाते 12–15 वर्ष की उम्र में ही घर के अधिकांश कार्यों में दक्ष हो जाती हैं। घर के काम को वह उतनी ही जिम्मेदारी से करती हैं, जितना की उनकी माँ। इन दोहरी जिम्मेदारियों के बीच उनकी शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि घर के कामों को। घर के छोटे से छोटे कार्यों में उनकी भूमिका होती है। घर के लोगों को मालूम भी नहीं होता कि वह घर के सारे कार्यों को कैसे कर जाती हैं और कितने कार्य दिनभर में उसे करने पड़ते हैं। इन सब बातों को ध्यान में न रखते हुए घर के किसी सदस्य को जब अपने निजी कार्य करवाने होते हैं। वे उनको डांट फटकार लगाते हैं, कभी–कभी पिटाई भी की जाती है।'बेघर'उपन्यास में परमजीत की छोटी बहन की स्थिति के वर्णन से यह बात स्पष्ट हो जाती है: "माँ के बीमार पड़ने पर वह छोटी बहन को डांट देता। छोटी बहन उसे कोई महत्व न देती। उसकी बात आधी मुंह में ही होती और बहन उसे छोड़कर रसोई में चली जाती। बहन का सिर जुओं से भरा था तथा हाथ मसालों के गंध से। माँ के बच्चों को पालते–पालते वह बुजुर्ग हो चली थी। उसे सभी के दूध का, स्कूल का समय याद रहता और सुबह सारे बच्चों के कपड़े ढूंढ़ कर देती थी। यह बात और थी कि वह पढ़ने में निकम्मी थी। उसका स्कूल जाना अक्सर किसी भी कारण से रुक जाता था, बच्चे के दांत निकलने से लेकर घर भर के पाजामे सीने की जरूरत तक।"[2]

ममता कालिया के उपन्यास 'लडकियाँ' में आफ्शाँ, लल्ली, 'एक पत्नी के नोट्स' में कविता 'प्रेम कहानी' में यशा और जया, 'नरक दर नरक' में उषा 'बेघर' में रमा, केकी, संजीवनी तथा 'अँधेरे का तालाश में नंदनी जैसी महिलाएं मध्यवर्गीय स्त्रियों का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। आधुनिक समय में मध्यवर्गीय घरों में भी बेटा और बेटी के प्रतिमान बदल रहे हैं। ये परिवार कुछ सीमाओं के बावजूद अपनी लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वयं मन में लालसा पाले रहते हैं। यह वर्ग चाहने लगा है कि उनकी बेटी भविष्य में आर्थिक तंगी का शिकार न हो। शिक्षा प्रसार के प्रारंभिक दिनों में बेटी की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, वे मात्र शैक्षणिक क्षेत्र में ही उन्हें कैरियर बनाने के लिए जोर देते थे। वर्तमान में शिक्षा को आर्थिक निर्भरता का प्रबल साधन माना जाने लगा। स्त्री की भूमिका के विषय में महादेवी वर्मा जी ने लिखा है "आधुनिक युग में घर से बाहर भी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, जो स्त्री के सहयोग की उतनी ही अपेक्षा रखते हैं, जितनी पुरुष की।"[3] जिसके कारण इस वर्ग में पुत्रों के समान पुत्रियों को भी सेवा क्षेत्र (बैंकिंक, रेल, चिकित्सा, सेना, पुलिस, शिक्षा, निर्माण आदि) तथा सूचना प्रौद्योगिकी (इंजीनिरिंग) आदि क्षेत्रों में उन्हें अवसर मिलने लगे हैं।

ममता जी ने मध्यमवर्ग की स्त्रियों को अपने उपन्यास में शिक्षा के क्षेत्र में और विज्ञापन की दुनिया में कैरियर बनाती हुई प्रस्तुत कर रही हैं। उनके उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' में कविता (अध्यापिका), 'लडकियाँ' में आफ्शाँ (माडलिंग और विज्ञापन), लल्ली (माडलिंग और विज्ञापन),तथा 'अँधेरे का तालाश' में नंदनी (अध्यापिका) आदि जो आत्मनिर्भर हैं। ये स्त्रियाँ अपने जीवन से संबंधित अधिकांश निर्णय खुद ले रही हैं। उनके उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' में इसका उदाहरण कविता, उसके पति संदीप और साहित्यकार संपूर्ण सिंह के मध्य हुए संवादों में देखने को मिलता है– "विजय कुमार और संपूर्ण सिंह उनके घर से असंतुष्ट ही गये, लेकिन कविता को अच्छा लगा कि संदीप के मन में साहित्यकारों के लिए अंधी आस्था की जगह तार्किक चेतना थी। काश कि अधिकार के अतिरेक में वह उस पर ऊलजलूल आरोप न लगाता। खाना खाते हुए संदीप ने कहा, कवि डार्लिंग, तुम्हारा पत्ता तो अब समकालीन साहित्य से साफ ही हुआ समझो। संपूर्ण सिंह जी में सत्य सुनने का ताव नहीं है। असहमति को वे अवज्ञा समझते हैं।

"मेरा पत्ता तो आजकल हर जगह से टूटा हुआ है, पर बात तुम्हारी सही थी।"
होता यही है, मैं सच बोलता हूँ तो लोग बुरा मान जाते हैं।
मैं लोग नहीं हूँ, तुम्हारी साथी हूँ। मुझसे गलत बयानी करते हो तब मैं टूटती हूँ।" [4]

'एक पत्नी के नोट्स' में लेखिका ने यह भी दिखाया है कि प्राचीन काल से चले आ रहे स्त्रियों के आर्थिक

अधिकार में विशेष बदलाव नहीं आए हैं। उनके संपत्ति के अधिकार और खुद का घर कौन–सा है, आज भी दुविधा की स्थिति है। इस कारण उन्हें शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना सहनी पड़ती है क्योंकि विरोध के लिए आवश्यक आर्थिक संबल उनके पास नहीं होता है। अतः अपने अस्तित्व को बचाने के लिए उन्हें प्रताड़ना सहनी पड़ती है जिसका उदाहरण ममता जी के कई उपन्यासों में मिलता है: "कहाँ जाओगी इस वक्त? उस घर में, जहाँ तुम्हारे पिता भी अनचाहे मेहमान की तरह रह रहे हैं या शहर के रेडलाइट एरिया में?"[5]

विवाह के बदलते मानक

उच्च वर्ग में लड़कियों को भी शिक्षित करने की जागरूकता उत्पन्न हुई है। उनके माता–पिता भी चाहते हैं की उनकी बेटी आत्मनिर्भर बने, जिससे अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय खुद ले सके तथा किसी अन्य पर निर्भर होने से, होने वाले शारीरिक और मानसिक शोषण का विरोध कर सकें या बच सकें। 'दौड़' उपन्यास में परंपरागत वैवाहिक जीवन और आधुनिक वैवाहिक जीवन में सामंजस्य स्थापित किया गया है। यह उपन्यास परंपरा को खारिज न करके उसे आधुनिक समाज में शामिल करता है। स्टैला और पवन दोनों विवाह के पूर्व से ही साथ–साथ रहने लगते हैं जो परंपरागत समाज स्वीकार नहीं करता है। पवन और स्टैला के विवाह पूर्व संबंधों में रहने को लेकर पवन की माँ कहती है कि "मैंने तो ऐसी कोई लड़की नहीं देखी जो शादी से पहले ही पति के घर रहने लगे।"[6] पवन अपनी माँ की इस विचारधारा का विरोध नहीं करता है, वह उन्हें बदलते समय के साथ विवाह प्रथा में हो रहे सार्थक परिवर्तन से अवगत कराता है, जिसका वर्णन उपन्यास में इस तरह से आया है: "तुमने देखा क्या है माँ? इलाहाबाद से निकलोगी तो देखोगी यहाँ गुजरात, सौराष्ट्र में शादी तय होने के बाद लड़की महीने भर ससुराल में रहती है। लड़का–लड़की एक दूसरे के तौर–तरीके समझने के बाद शादी करते हैं।"[7]

लिव इन रिलेशनशिप पर कई लेखिकाओं ने अपनी सहमति प्रकट की है। ममता जी ने भी 'दौड़' उपन्यास में स्टैला और पवन के विवाह पूर्व से ही संबंधों में रहने का समर्थन करती हैं। वे इस व्यवस्था के संबंध में 'मेरे साक्षात्कार' में लिखती हैं कि: "लिव इन रिलेशनशिप की विधिक मान्यता की बात आई तो इससे बहुत बड़ा समाज–सुधार हो सकता है। साथ रहने में पाप, अपराध की जो भावना देखी जाती है, वह समाप्त हो जाएगी। विवाहेतर स्त्री का पुरुष की संपत्ति में अधिकार होगा।"[8]

उदारीकरण के बाद स्त्री के प्रति पुरुष का नजरिया

उदारीकरण के बाद बहुराष्ट्रीय कंपनियों के भारत में स्थापित होने के साथ ही अपने साथ एक नया युग लायीं, जिसे 'संचार युग' कह सकते हैं। यहीं से विज्ञापन और दिखावेपन का दौर शुरू होता है। आधुनिक मनुष्यों को रिझाने के लिए सबसे आकर्षित वस्तु के रूप में उन्होंने खोजा 'स्त्रियों' को, जो अकेले एक बड़े पुरुष वर्ग को क्षण में प्रभावित कर सकती हैं। उदारीकरण के बाद से सदियों से चाहरदीवारी में बंद महिलाओं को एक नया फलक प्राप्त हुआ, जिससे वे उस परंपरागत समाज से बाहर एक उत्साह के साथ निकली लेकिन वे नहीं समझ पायीं कि उनकी देह का कितना बाजारीकरण कर दिया जाएगा और नयी समस्याओं से घिर जायेगीं।

आज इसी उदारीकरण का प्रभाव है कि स्त्रियाँ पाश्चात्य सभ्यता से तेजी से प्रभावित हो रही हैं। 'लडकियाँ' और 'बेघर' उपन्यास में ममता जी ने दिखाया है कि बाजार ने स्त्रियों को अपनी सोच का कैसे गुलाम बना लिया है। हर समय जाने–अनजाने में वे बाजार की सोच से संचालित की जा रही हैं। 'लडकियाँ' उपन्यास में इस तरह से ममता जी ने दिखाया है: "लड़कियों में अचानक देखने आता सभी लड़कियों ने चूडीदार पायजामे और कुरते पहने हैं अचानक देखते कि उसकी जगह मिनी स्कर्ट ने ले ली है, अचानक लडकियाँ गहरे रंग की लिपस्टिक लगाने लगतीं और अचानक ही शोख लिपस्टिकें आउट ऑफ डेट हैं और उनकी जगह त्वचा के रंग की लिपस्टिक चल पड़ती है।"[9]

समाज में कुछ पुरुषों की मानसिकता इतनी दूषित होती है कि उनके दिमाग में स्त्री की एक अलग ही छवि बनी रहती है। यह छवि सिनेमा, विज्ञापन तथा संचार के अन्य माध्यमों के द्वारा अनायास ही निर्मित होती रहती है। ऐसे लोगों के दिमाग में स्त्री मात्र एक उपभोग की वस्तु होती है। कभी–कभी इस प्रकार की मानसिकता के लोग

समाज में समस्या उत्पन्न करते हैं। वह अवसर पाने पर स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित भी करते हैं।'बेघर' उपन्यास में इसका जिक्र इस तरह से आया है: "दरअसल वह ऐसी लड़की चाहता था जैसे अख़बार के विज्ञापन–चित्रों में होती थी। उसका ख्याल था, लोग उसकी पत्नी के बारे में ऐसी राय रखें जैसी अभिनेत्रियों के बारे में रखते हैं।"[9] (बेघर, ममता कालिया, पृष्ठ– 34)

अक्सर यह सुनने और देखने में मिलता है कि एक सुन्दर स्त्री दूसरी सुन्दर स्त्री को नहीं पसंद करती है। ऐसा इसलिए होता है कि स्त्रियों को पेश करने का पुरुषवादी नजरिया समाज में फैल चुका है जिसमें सिनेमा और मीडिया का प्रमुख स्थान होता है। इसका उदाहरण 'लडकियाँ' उपन्यास में इस तरह मिलता है: "सोनिया पटेल, सपना सारंग और मालिनी मुखर्जी, पारदर्शी साड़ियों में आयी थीं। चोली के नाम उन्होंने जो पहना हुआ था, वह ब्लाउज न कहकर बहाना कहा जा सकता था। जिस मॉडल के पास जो दौलत थी, उसी की नुमाइश लगी हुई थी। कोई अपनी टांगों के बल पर, तो कोई अपनी कमर के बल पर पार्टी जमाने की कोशिश में थी लेकिन पार्टी के प्राण फिर भी आफ्शाँ की आँखों में बसे थे।"[10]

स्त्री और शुचिता का प्रश्न

स्त्रियों में कौमार्य की खोज पुरुष करता है। वह नहीं देखता है कि उसका खुद का चरित्र का कैसा है? एक बार शारीरिक रूप से अपमानित होने के बाद लड़कियाँ अपने जीवन को निरर्थक समझने लगती हैं। लेखिका ने, स्त्रियों के झेले गए शारीरिक अपमान को, अपने विमर्श में प्रबल रूप से स्थान दिया हैं। जिसके विषय में डॉ. एम. फ़िरोज खान लिखते हैं कि: "स्त्री विमर्श का सबसे अहम मुद्दा देह का है।"[11] पुरुष एक बार किसी महिला को अपमानित करने के बाद मौका पाने पर वह किसी भी अन्य महिला को फिर अपमानित कर सकता है। इस प्रकार के व्यवहार से उसके आगामी जीवन में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह पहले की तरह समाज में सिर ऊँचा करके चलता है। उसकी पवित्रता अपवित्रता पर कोई सवाल नहीं उठाता है। इसका जिक्र ममता जी अपने उपन्यास 'बेघर' में परमजीत और संजीवनी के माध्यम से करती हैं। संजीवनी के साथ उसका विपिन नाम का दोस्त बलात्कार करके निश्चिंत होकर मारीशस अपने पिता का व्यापार चलाने चला जाता है। संजीवनी इस हादसे से निकल नहीं पाती है कि इसी दौरान संजीवनी का संपर्क परमजीत से होता है। वह भी संजीवनी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करता है। जब परमजीत को पता चलता है कि संजीवनी का कौमार्य इसके पहले अपवित्र किया जा चूका है: "परमजीत को तकलीफ हुई, बेहतर तकलीफ, यह जानने की कि वह पहला नहीं था। बदहवासी मिटते ही यह बात उसे पत्थर की तरह लगी। लड़कियों के कुंवारेपन की पहचान उसने चीख–पुकार और खून से संबद्ध की थी।"[12] उसे ग्लानि होती है कि उसने ऐसी लड़की से संबंध स्थापित किया था, जिसका कौमार्य पहले ही नष्ट किया जा चुका है। अन्ततः परमजीत उसे छोड़ देता है और दूसरा विवाह कर लेता है।

प्रश्न यह उठता है कि परमजीत संजीवनी से ऐसी अपेक्षा रख सकता है कि उसे हर हालत में अपने कौमार्य को बचाए रखना चाहिए। लेकिन क्या उसकी पत्नी या कोई अन्य लड़की, पुरुष से उसके कौमार्य पर सवाल कर सकती है? इस सवाल का जवाब ममता कालिया जी ने परंपरागत समाज को दृष्टि में रख कर नहीं दिया हैं, बल्कि वह संजीवनी को प्रगतिशील स्त्री के रूप में चित्रित का रही हैं, जो दोनों घटनाओं के घटने के बाद भी किसी प्रकार से अपने को शारीरिक या मानसिक कष्ट नहीं पहुँचाती है। अपनी स्थिति का जिम्मेदार खुद को न मानकर विपिन को मान रही है जिसका वर्णन उपन्यास में इस तरह से आया है: "उसका बदन अन्याय की आग से जल उठा। जो अनुभव उसने एन्जॉय भी नहीं किया था, उसके लिए वह जिम्मेदार और दोषी कैसे ठहराई जा रही है थी। वह विपिन जिसे इतनी भी तमीज नहीं थी कि वह वस्तुतः एक भोली लड़की थी, अब मारीशस जा कर बैठ गया था बिना यह सोचे कि उसने संजीवनी की दुनिया ख़त्म कर डाली है और आज से वह खुद अपनी आँखों में भी अपराधी हो गयी है।"[13] संजीवनी के विषय में डॉ. विमल शर्मा लिखते हैं: "संजीवनी उपन्यास की उन आधुनिक कहीं जाने वाली नायिकाओं में से है जो विवाहपूर्व भी यौन संबंधों को स्वीकारती है।"[14]

परिवार में स्त्री की भूमिका

संयुक्त परिवारों में स्त्रियों का अधिकांश समय परिवार के मनमुटावों में चला जाता है। काम और आपसी व्यवहार को लेकर उनका खुद का निजी वजूद निर्मित नहीं हो पाता है। कुछ परिवारों में स्त्रियों की स्थिति गुलाम की तरह होती है। अधिक समय लगने वाले और कई लोगों को प्रभावित करने वाले काम की जिम्मेदारी उनको दे दी जाती है। थोड़ी भी कसर रहने पर सारा परिवार उनके अन्य काम को नजरअंदाज करके, उनको हर तरह से प्रताड़ित करता है। घरेलू कार्यों की सारी जिम्मेदारी उन्हीं के जिम्मे होती है। घर में बुजुर्गों की सेवा करना, रसोईघर का काम, बच्चों से संबंधित सारे कार्य, आदि स्त्री के कार्य कहे जाते हैं। ऐसे अनेक कार्यों के विषय में फैली पारंपरिक धारणा के विषय में आज भी परिवर्तन नहीं दिखायी पड़ता है। पुरुष तो इन कार्यों में अपना हाथ लगाना अपने पुरुष समाज की तौहीन समझता है। इस परंपरागत विचार के प्रति लेखिका ने 'बेघर' उपन्यास में एक स्त्री के बदलते नजरिये को चित्रित की हैं,जिसका प्रतिनिधित्व संजीवनी नाम की स्त्री पात्र कर रही है। उसका जिम्मेदारियों के प्रति यह नजरिया है कि जो जहाँ पर उपलब्ध है, उसे वह जिम्मेदारी लेने में कार्य विभाजन की प्रचलित मानसिकता को बदल लेनी चाहिए। वह अपने भाई के इस पुरुषवादी नजरिये का विरोध करती है, जब एक दिन सभी के द्वारा उपेक्षित हो जाने पर उसकी माँ बीमार पड़ जाती हैः "नानूभाई ने अपनी बीवी की सफाई देते हुए कहा, "वह तो इसलिए कहीं आती–जाती नहीं है। बड़े दिनों में आज निकली तो यह काण्ड हो गया। संजीवनी बिफर गयी थी, वह होती भी तो क्या कर लेती। तुम लोग मिलकर माँ को मार डाल रहे रहे हो। तुम यही चाहते हो। भाभी दिनभर में पांच मिनट भी उनके पास नहीं बैठती। तुमने कभी पुछा है उन्हें क्या तकलीफ है। बप्पा को तुमने गुलाम बना के रख है। उनकी हिम्मत नहीं कि तुम्हारी मर्जी के बगैर किसी से बात कर लें।"[15]

प्रेम, शंका और स्त्री

उच्चवर्गीय समाजों में भी देखा जाय तो स्त्रियों के प्रति पुरुषों का प्रेम घर की चारदीवारी तक ही सीमित है। बाहरी समाज से उन्हें अलग रखना चाहता है। अक्सर देखा जाता है कि जब पति–पत्नी दोनों आर्थिक रूप से निर्भर हैं तो उनमें एक दूसरे के प्रति शंका, नशीली दवाओं के सेवन और शराब के सेवन आदि मामलों को लेकर विवाद उठता रहता है। इस वर्ग की स्त्रियाँ शंका को लेकर अपने पति द्वारा प्रताड़ित होती रही हैं। ममता कालिया जी ने अपने लघु उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' में कविता और संदीप के माध्यम से इसका वर्णन इस तरह किया हैः "डोंट डिस्टर्ब। मुझे फाइलें पूरी करनी है और सुबह की फ्लाइट से दिल्ली जाना है।

क्यों?

क्यों क्या? मीटिंग है। तुम्हारी तरह सैर सपाटे की मुझे फुर्सत नहीं।

मैं कहाँ सैर सपाटा करती हूँ?

यकायक संदीप ने उसका जूड़ा झिंझोड़ डाला, दोपहर में कौन ले गया था तुम्हें लंच पर?

कौन? कहाँ? कोई भी तो नहीं! मैं कसम से कहती हूँ, मैं वहीं स्टाफरूम में थी। हेड ने आज एक एक्स्ट्रा पीरियड पढ़ाने के लिए कह दिया।"[16] कविता एक सुशिक्षित स्त्री है।वह अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक है, कितना ही वह अपने पति द्वारा प्रताड़ित न होती हो लेकिन उसकी ज्यादतियों का वह तर्क के साथ प्रतिरोध करती है। अंत तक कविता का अपने प्रेम विवाह से मोहभंग भी हो जाता है। ममता कालिया जी ने कविता में आधुनिक सुसंस्कृत और सुशिक्षित स्त्री की कल्पना की है जो अपने पति के प्रभुता के आगे नहीं झुकती है।

प्रगतिशील स्त्री

ममता जी का 'अँधेरे का ताला' एक प्रगतिशील महिला नंदिता पर आधारित उपन्यास है। जिसमें ममता जी ने 'एक पत्नी के नोट्स' की पात्र कविता की तरह एक सुशिक्षित स्त्री नंदिता के प्रगतिशील जीवन का वर्णन करती हैं, जो रानी लक्ष्मीबाई महिला कॉलेज की प्रिंसिपल है। नंदिता एक गंभीर अनुशासनप्रिय एवं साहसी महिला है। वह कॉलेज को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस कॉलेज का प्रबन्धक, महिला प्राध्यापिकाओं को उचित वेतन नहीं देता है। नंदिता कॉलेज में व्याप्त अपराध, प्राध्यापिकाओं के अपमान तथा मूलभूत सुविधाओं पर चिंता व्यक्त

करती है जिसका वर्णन उपन्यास में इस तरह से आया हैः "रुपये तो आ ही जायेंगे पर उसके मनोबल पर लगातार प्रहार हो रहे हैं, आत्मविश्वास को ठेस पहुँच रही है,उसके नागरिक अभिमान की धज्जियाँ उड़ रही हैं शिक्षा जगत का तेजी से अपराधीकरण हो रहा है, यह सब कैसे सुधर पायेगा।"[17] (स्रोत– नेट, 'अंधेरे का ताला' पृष्ठ–75)

प्रगतिशील लड़की का एक उदाहरण 'दौड़' उपन्यास में देखने को मिलता है। इस उपन्यास की नायिका स्टैला कम्प्यूटर के व्यवसाय से जुड़ी है, जो लाखों का कारोबार करती है। यह अत्याधुनिक स्त्री की प्रतिनिधित्व करती है। पवन जैसा अत्याधुनिक लड़का उसके इसी गुण से उससे विवाह करता है। वह स्टैला का परिचय अपनी माँ से इस तरह करता हैः "पवन ने परिचय कराया। स्टैला ने हेलो किया।'' पवन ने माँ से कहा "माँ स्टैला मेरी बिजनेस पार्टनर, लाइफ पार्टनर, रूम पार्टनर तीनों है।"[18] स्टैला आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण के दौर में अपने पति पवन के साथ कामयाबी की दौड़ में शामिल होती है।

आधुनिक समय में मध्यमवर्गीय और उच्चवर्गीय परिवारों में सुशिक्षित स्त्रियों की संख्या बढ़ रही है। अपने जीवन से संबंधित निर्णय भी वे लेने लगी हैं। लेकिन उनका निर्णय उस श्रेणी को नहीं प्राप्त कर पाया है, जिससे खुद की अस्मिता स्थापित कर सकें। जब भी कहीं वर्चस्व की बात उठती है तो स्त्रियों को उसी स्थान पर धकेल दिया जाता हैं, जहाँ पर वर्षों पहले थी। "यद्यपि नई नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में 'नई स्त्री' ने अपने व्यक्तित्व अपनी अस्मिता को पहचान देने का प्रयत्न किया है पर अब भी व्यक्तित्व की भूमिकाओं को तलाशने का सिलसिला थमा नहीं है।"[19] 'नरक दर नरक', 'बेघर', 'प्रेम कहानियाँ' जैसे अधिकांश उपन्यासों में ममता जी ने इसका वर्णन किया है।

सुशिक्षित उषा सुन्दर न होने के कारण अकेलेपन से ग्रसित हो जाती है जिससे वह अपना अधिकांश समय किताबों के अध्ययन में व्यतीत करती है। लेकिन इस अकेलेपन से इतर उसका एक अन्य अकेलापन है, जो लाख किताबों को पढ़कर भी बना रहता है। निम्न पंक्तियों में उसकी मनःस्थिति जाहिर होती हैः "पर इस सारे हिसाब–किताब में वे यह भूल गये कि उषा की उम्र सिर्फ इक्कीस साल चार महीने है और इक्कीस साल की लड़की का एक और अकेलापन होता है।"[20] उषा की बुद्धिमत्ता से जोगेंद्र साहिनी उर्फ़ जगन जो उषा के कालेज का अध्यापक था उसे पसंद करता है, और विवाह करता है। विवाह के उपरांत कुछ समय बाद जगन उषा को बात–बात पर प्रताड़ित करता है। वह जब भी कालेज के वरिष्ठ कर्मचारियों से प्रताड़ित होता से सारा गुस्सा उषा पर निकालता है। इसका उदाहरण उपन्यास में इस तरह से आया हैः "तुमसे कोई बात भी करना मुश्किल होती जा रही है। यही घुड़कियाँ खाने के लिए तुम्हारा सुबह से इन्तजार करती रही हूँ।

मैं तुम्हारे लिए बस यहीं इम्पार्टेंट है कि तुम क्या करती रही हो। मैं साला अपना खून बेचकर भी आऊँ तो भी मेरी तरफ देखकर पूछोगी नहीं, मेरा क्या हाल है। तुम्हारा क्या पार्टिसिपेशन है मेरी परेशानियों में।"[21] उसके इस व्यवहार से पता चलता है कि पुरुष की जिन्दगी में स्त्री इसलिए आती है कि अपने दिनभर भटकने के बाद अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति और मानसिक भड़ासों को उस पर निकाल सके।

निष्कर्ष

ममता कालिया जी ने अपने उपन्यास में 70 के दशक के बाद की स्त्रियों के जीवन को केन्द्रित किया है। उन्होंने स्त्रियों के जीवन के लगभग हर पहलू को छुआ है। उनके उपन्यासों से यह निष्कर्ष निकलता है कि वे ऐसे स्त्री की कल्पना कर रही हैं जो पुरुषों से कंधे से कंधे मिला कर चल सके। वे ऐसे अधिकारों की माँग कर रही हैं, जिससे वे अपने जीवन से संबंधित उचित निर्णय ले सकें। इनके अधिकांश उपन्यासों में ऐसे पुरुषों को भी स्थान दिया गया है, जो स्त्रियों के प्रति संतुलित दृष्टि अपनाने की ओर उन्मुख हैं। ये पुरुष पात्र कई विवादों–संवादों के पश्चात् स्त्रियों के प्रतिरोध को समझ भी रहें हैं। इन्होंने आधुनिक स्त्री पर पड़ रहे बाजार के प्रभावों को भी दर्शाया है जो महिलाओं को एक विस्तृत फलक देने के साथ नयी समस्याएं भी निर्मित कर रहा है।

इनके उपन्यास का कथ्य और शिल्प अत्यंत सहज और सरल है जो पाठक की समझ में आसानी से आ जाता है। हर घटना और पात्र का आना उपन्यास में अनावश्यक नहीं है। घटनाओं का आगे पीछे की घटनाओं से जुड़ाव

इनके लगभग सभी उपन्यासों की विशेषता है।

सन्दर्भ सूची

1. कालिया, ममता, *प्रेम कहानी,* किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2014, पृष्ठ 168।
2. कालिया, ममता, *बेघर,* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2002, पृष्ठ 24।
3. वर्मा, महादेवी, *श्रृंखला की कड़ियाँ,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण– 2008, पृष्ठ 55।
4. कालिया, ममता, *एक पत्नी के नोट्स,* किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2014, पृष्ठ 63।
5. वही, पृष्ठ 68।
6. कालिया, ममता, *दौड़,* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, छठा संस्करण– 2014, पृष्ठ 52।
7. वही, पृष्ठ 52।
8. कालिया, ममता, *मेरे साक्षात्कार,* किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2014, पृष्ठ 121।
9. कालिया, ममता, *बेघर,* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2002, पृष्ठ 34।
10. कालिया, ममता, *लडकियाँ,* किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2014, पृष्ठ 95।
11. खान, एम. फ़िरोज, *नारी विमर्श : दशा और दिशा,* आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाज़ियाबाद, प्रथम संस्करण– 2010, पृष्ठ 49।
12. कालिया, ममता, *बेघर,* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2002, पृष्ठ 93।
13. वही, पृष्ठ 98।
14. बीजापुरे, फैमिदा, *ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व,* विनय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण– 2004, पृष्ठ 114।
15. कालिया, ममता, *बेघर,* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2002, पृष्ठ 97।
16. कालिया, ममता, *एक पत्नी के नोट्स,* किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2014, पृष्ठ 25।
17. स्रोत– नेट, *अँधेरे का ताला*।
18. कालिया, ममता, *दौड़,* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, छठा संस्करण– 2014, पृष्ठ 51।
19. कस्तवार, रेखा, *स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ,* राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहली आवृत्ति– 2009, पृष्ठ 168
20. ममता, कालिया, *नरक दर नरक,* किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण– 2013, पृष्ठ 47
21. वही, पृष्ठ 67।

****